International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(5): 140-142

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(5): 140-142
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-07-2017
Accepted: 29-08-2017

**डॉ० हर्ष देव सिंह**
पी० एच० डी०, N.E.T, S.E.T,
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू कश्मीर, भारत।

**Correspondence**
**डॉ० हर्ष देव सिंह**
पी० एच० डी०, N.E.T, S.E.T]
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू कश्मीर, भारत।

# नारी एवं पुरन्ध्रीपूचकम्

## डॉ० हर्ष देव सिंह

### प्रस्तावना

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''

इस उक्ति के आधार पर आचार्य मनु ने स्वीकार किया है कि स्त्रियों का स्थान संसार में श्रेष्ठ है। भारत की नारी ने जीवन की कठोरतम परिस्थितियों में भी अपने जिस साहस और शौर्य का परिचय समय–समय पर दिया है उसे भारत का इतिहास कभी भी भुला नहीं सकता है। ऐसे ही सब प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ में रखकर ''पुरन्ध्रीपूचकम्'' की रचना की गई है। ''पुरन्ध्रीपूचकम्'' नामक रूपक में नारीपात्र प्राचीन भारतीय नारी के कुछ गुणों को अभिव्यक्त करते हैं। इसमें प्राचीन प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ में रखकर कुछ समसामयिक समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास भी किया गया है। प्रो० वेदकुमारी घई जी द्वारा रचित ''पुरन्ध्रीपूचकम्'' रूपक में पांच रूपकों को संगठित किया गया है – मेनकावात्सल्यम्, अपूर्वः प्रतिशोध, मदालसा, सुगन्धा, द्राक्षामतःशकुन्तला।
अंग्रेजी में जिस अर्थ में 'ड्रामा' (क्तंउं) शब्द का प्रयोग होता है, उसी अर्थ में संस्कृत साहित्य में रूपक शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसे रूपक इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें नट पर तत्तत् पात्र का रामादि का आक्षेप किया जाता है।[1]

### (क) मेनकावात्सल्यम्

"पुरन्ध्रीपूचकम्" पांच रूपकों का संग्रह है इसके प्रथम रूपक "मेनकावात्सल्यम्" में निर्मम प्रेमी द्वारा छोड़ दी गई एक नारी के दृढ़ संकल्प का चित्रण है। कालिदास के उपेक्षित पात्र ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' की नायिका शकुन्तला की माँ मेनका है। उसी उपेक्षित पात्र के व्यक्तित्व की झलक इस रूपक में दी गई है। इस रूपक के प्रथम दृश्य में इन्द्रसभा की अप्सरा मेनका को इन्द्र से विश्वामित्र का तपोभंग करने का आदेश मिलता है। मेनका कहती है – "अनुल्लंघनीय खलु स्वामिनः आदेशः"[2] अर्थात् मैं अपने स्वामी के आदेश को अस्वीकार नहीं कर सकती। इसलिए मैं विश्वामित्र का तपोभंग करने अवश्य जाऊँगी।
विश्वामित्र के तप को भंग करने गई मेनका वहां के प्राकृतिक दृश्यों से प्रभावित होती है और विश्वामित्र को मन ही मन पति रूप में स्वीकार करने का निर्णय लेती है। विश्वामित्र मेनका के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं और मेनका वहीं उन्हीं के पास ठहर जाती है। तृतीय दृश्य में विश्वामित्र मेनका को अकेली आश्रम में छोड़कर जा चुके हैं। वहां पर मेनका गर्भावस्था में अपने धैर्य का परिचय देती हुई कठिन परिस्थितियों के बावजूद एक पुत्री को जन्म देती है। पुत्री के जन्म के पश्चात् वह उसे लेकर कण्व ऋषि के आश्रम में पहुँचती है, वहां कण्व ऋषि उसकी व्यथा–कथा सुनकर प्रभावित होते हैं कि वह स्वयं एक नर्तकी होने के बावजूद अपनी पुत्री को उच्च शिक्षा से सुसज्जित कर अच्छी गृहिणी बनाना चाहती है। कण्व ऋषि मेनका को बताते हैं कि चार वर्ष पहले गौतमी भी वैधव्य का दुःख लेकर अपनी बेटी अनसूया को शिक्षित करने के उद्देश्य से उनके पास आई थी और आज वह छात्रावास निरीक्षिका के रूप में उनकी सहायता कर रही है। कण्व इस बात से व्यथित हैं – "नारीपुरुषयोः समाने सति प्रायशः नारी एवं कष्टं भजते"[3] अर्थात् नारी और पुरुष का समान अपराध होने पर प्रायः नारी को दण्ड भोगना पड़ता है। पत्नी के बिना पुरुष शीघ्र ही दूसरा विवाह कर लेता है, परन्तु पति के बिना पत्नी सदा दुःखों को झेलती रहती है और दुःखों को सहन करते–करते सारा जीवन बिता देती है।

### (ख) अपूर्वः प्रतिशोध

"पुरन्ध्रीपूचकम्" रूपक संग्रह का दूसरा रूपक है 'अपूर्वः प्रतिशोध' – इस रूपक में एक मर्मस्पर्शिनी घटना अंकित है। "प्रतिहिंसा से हिंसा नहीं मिलती" यही इस रूपक का सन्देश है। इसके प्रथम दृश्य में अश्वत्थामा द्रौपदी के भाईयों और पांचों पुत्रों की हत्या कर के प्रसन्न हैं और इस प्रतिशोध की सूचना दुर्योधन तक पहुँचाने जा रहा है। उसे सन्तोष है कि जिस प्रकार युधिष्ठिर ने छल से उसके पिता की हत्या करवा दी थी, उसी प्रकार उसने सोते हुए पाण्डव–पुत्रों पर आक्रमण कर उन्हें मृत्यु की नींद सुला दिया है। अब पाण्डव विजयी तो हो जायेंगे परन्तु उनकी विजय भी आंसुओं से भीगी विजय होगी। इस प्रतिशोध के बाद वह दुर्योधन के पास शीघ्र पहुँचना चाहता है ताकि पाण्डव यह समाचार सुनकर सुख से स्वर्ग जा सके। दूसरे दृश्य में द्रौपदी पाण्डवों की विजय के समाचार को सुनने की प्रतीक्षा में बैठी हुई है। तभी द्वार पर नकुल की उपस्थिति को देखकर वह मन ही मन सोचती है कि उसकी वेणी के शृशार का अवसर आ गया है। नकुल के चेहरे पर उदासी देखकर द्रौपदी सोचती है कि शायद नकुल कौरवों की पराजय से दुःखी है। परन्तु कौरव भी तो अपने भाई थे, युद्ध की नीति ही ऐसी है जिसमें एक पक्ष का विनाश हो या दूसरे का, लेकिन विनाश तो होता है –

**"युद्धस्य परिणतिः तु विनाश एव, एकपक्षस्य वा द्वितीयपक्षस्य वा।"[4]**

### (ग) मदालसा

मार्कण्डेयपुराण में वर्णित मदालसा आख्यान के आधार पर लिखित "पुरन्ध्रीपूचकम्" रूपक संग्रह का तीसरा रूपक है "मदालसा"। यह रूपक भारतीय नारी का भव्यरूप अभिव्यक्त करता है। मदालसा गन्धर्वराज विश्वावसु की पुत्री है, जो धर्म, दर्शन, राजनीति आदि सभी विषयों में निष्णात है। इस रूपक के प्रथम दृश्य में मदालसा और उसकी सखी कुण्डला आपस में वार्तालाप कर रही हैं। कुण्डला मदालसा को गृहस्थ–आश्रम का महत्त्व बताकर विवाह के लिए प्रेरित करती है परन्तु मदालसा ब्रह्मवादिनी होकर अपना जीवन शिष्याओं के निर्माण में लगाना चाहती है।

**"ब्रह्मवादिनी भविष्यामि। आचार्यपदं प्राप्य शिष्येभ्यः जीवनकलां शिक्षिष्यामि।"[5]**

मदालसा कहती है ऐसी पत्नी बनने से क्या लाभ जिसमें युधिष्ठिर की पत्नी (द्रौपदी) को भरी सभा में लज्जित होना पड़ा और हरिश्चन्द्र की पत्नी (शैव्या) को चाण्डाल के हाथ बिकना पड़ा था। राजकुमार ऋतध्वज वृक्ष की ओट में खड़ा दोनों की बातें सुन रहा है। कुण्डला कहती है कि संसार में विभिन्न प्रकृति के पुरुष रहते हैं। तुम्हारी प्रकृति का वर भी तुम्हें अवश्य मिलेगा। तभी वृक्ष की ओट में खड़ा राजकुमार ऋतध्वज सामने आकर कहता है कि किसी एक पुरुष के अपराध के कारण सारी पुरुष जाति को दण्डित करना उचित नहीं। वह मदालसा के विचारों से प्रभावित होकर विवाह का प्रस्ताव रखता है। वह कहता है कि नारी तो समस्त राष्ट्र की निमार्त्री है अर्थात् राष्ट्र का निर्माण करने वाली है। मदालसा ऋतध्वज के विचारों से प्रेरित हो विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है और दोनों गन्धर्व विवाह की विधि अनुसार विवाह कर लेते हैं। सखी कुण्डला मदालसा को कहती है कि गृहस्थाश्रम को प्रयोगशाला मानकर अपने ज्ञान विज्ञान का प्रयोग वह वहीं करें और ऋतध्वज ससे कहती है कि पति को पत्नी का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वह धर्म, अर्थ, काम इन तीनों की सिद्धि में पति की सहायिका होती है जो कोई और नहीं हो सकता।

**"भर्त्रा सदैव भार्या भर्तव्या रक्षितव्या च। यतो हि धर्मार्थकामसंसिद्धये यथा भार्या भर्तुः सहायिनी भवति तथा न कोऽपि अन्यः।"[6]**

अर्थात् घर की लक्ष्मी की रक्षा के लिए पत्नी का सहयोग अनिवार्य है। ऋतध्वज कुण्डला की बातों से सहमत है। मदालसा से विवाह कर उसे लेकर ऋतध्वज अपने राज्य लौट जाता है।

### (घ) सुगन्धा

"सुगन्धा" पुरन्ध्रीपूचकम् रूपक संग्रह का चतुर्थ रूपक है। यह रूपक कल्हण द्वारा विरचित "राजतरंगिणी" तथा जयन्त द्वारा लिखित "आगमडम्बर" से सामग्री लेकर लिखा गया है, तो कश्मीर के महाराजा शंकरवर्मा की पत्नी सुगन्धा के जीवनवृत्त पर आधारित है। पति के जीवित रहते सुगन्धा ने धार्मिक क्षेत्र में विशेष रुचि लेकर विभिन्न मतमतान्तरों के विवाद को शान्त करवाया था। फिर पति की मृत्यु के बाद उसे अपने पुत्र गोपालवर्मा की संरक्षिका और पुत्रों की मृत्यु के बाद स्वतन्त्र शासिका के रूप में कश्मीर पर राज्य किया। सर्व धर्मसमभाव, लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और प्रजा का हितचिन्तन उसके प्रमुख लक्ष्य थे जिन का अंकन इस रूपक में हुआ है।

इस रूपक के प्रथम दृश्य का आरम्भ नीलाम्बर, लीला और उनके साथियों के समूह गान से होता है। वह सुरापान और नृत्य आदि में ही जीवन की सार्थकता मानते हैं। दूसरी ओर से संकर्षण और बटु आते हैं। धर्माध्यक्ष संकर्षण चिन्तित हैं कि समाज के नैतिक पतन से गृहस्थियाँ उमड़ जाएंगी। तभी बटु कहता है कि जब हमें दोनों ने विवाह ही नहीं किया तो इसमें बिना किसी अर्थ के चिन्ता करने की क्या बात है। संकर्षण कहता है यह परिहास का समय नहीं है। हमें इस समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए। बटु कहता है कि हमारे शैवाश्रम में विद्वानों में जो संगोष्ठी हो रही है हमें इस समस्या को वहाँ पर उन लोगों के बीच रखना चाहिए। तभी वह दोनों वहां के लिए प्रस्थान करते हैं। तभी नीलाम्बर का प्रवेश होता है उसका चिन्ता कि सारा राजा का धन ब्रह्मचारियों तथा साधुओं में लुट रहा है। वह भी मतमतान्तरों की संगोष्ठी में जाकर ईश्वर को असिद्ध कर राजा को अपने मत में शामिल करना चाहता है परन्तु शैवाचार्य उसे इस बात की अनुमति नहीं देते। और वह दोनों पुनः उसी नाचरंग के लिए लौट जाते हैं। इसके बाद कई दिनों से चल रहे शास्त्रार्थ में निर्णायक, धैर्यराशि अपना फैसला देते हैं कि जैसे किसी बड़े घर में लोग कई दरवाजों से दाखिल होते हैं। उसी तरह अलग–अलग धर्म कई रास्तों में एक ही लक्ष्य को मोक्ष तक पहुँचाते हैं।

**यथा बहवः जनाः महागृहं प्रवेष्टुकामाः विभिन्नद्वारैः प्रविशन्ति तथैव मुमुक्षवोऽपि मोक्षप्राप्त्यै विभिन्नमार्गान् स्वीकुर्वन्ति।[7]**

सभी धर्म दया अहिंसा, सच्चाई को मानते हैं फिर झगड़ा कैसा। हाँ जी लोग केवल भोग–विलास का प्रचार कर रहे हैं, उन्हें देश से निकाल देना चाहिए। द्वितीय दृश्य में राजाज्ञा से ऐसी घोषणा होती है जिसे सुनकर नीलाम्बर और नीला घबरा जाते हैं। उन्हें इस बात पर क्रोध है कि "सत्ताधारियों के पाप कोई नहीं देखता।" मन्त्री का पुत्र शराब पी रहा है तो लोग कहते हैं दवाई ले रहा है।

**समर्थस्य को दोषः? निर्बला एव दोषभाजनानि दण्डपात्राणि च भवन्ति। अमात्यस्य पुत्रं सुरां पिबन्तम् अपि दृष्ट्वा जनाः कथयन्ति, यत् स तु औषधिसेवनं करोति इति।[8]**

बाद में वह दोनों कश्मीर भूमि से भाग निकलने की ठान लेते हैं तृतीय दृश्य में धर्माध्यक्ष संकर्षण और महारानी सुगन्धा की बातचीत चल रही है। सुगन्धा कहती है कि धार्मिक विवाद के सुलझने पर सभी लोग आपस में प्रेम से रह रहे हैं इस बात से मैं सन्तुष्ट हूँ। वह धर्माध्यक्ष से पूछती है कि कितने विद्यार्थियों का वजीफे दिये गये हैं। कितने विद्वानों को सम्मानित किया गया है? उसे बौद्ध विहार की मरम्मत और शैवमठ में पूजागृह बनवाने की सूचना भी

मिलती है। संकर्षण यह संदेश देता है कि कुछ स्वार्थी उच्चाधिकारी प्रजा को तंग करते हैं जिससे प्रजा में रोष फैल रहा है। तभी सुगन्धा की पुरानी सखी आश्रम की आचार्या योगेश्वरी आती है। महारानी संकर्षण को भेजकर योगेश्वरी के साथ राज्य में फैले भ्रष्टाचार के कारणों पर विचार करती है। महाराज शंकरवर्मा की निज–नयी युद्धयात्राओं पर होने वाले व्यय की पूर्ति प्रजा से लेकर और मन्त्रियों से धन लेकर की जा रही है। यह सूचना आकर एक गुप्तचर देता है। तभी योगेश्वरी सुगन्धा से कहती है कि वह अपने कर्तव्य का पालन निर्भय होकर करे। तुम न्याय के पथ पर चलते हुए तनिक भी हिम्मत नहीं हारना। न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।[9] वह कहती है कि महाराज अवश्य इस विषय में विचार करेंगे। सुगन्धा कहती है कि महाराज शंकरवर्मा की निज–नयी युद्धयात्राओं पर होने वाले व्यय की पूर्ति प्रजा से कर लेकर जी रही है। यही कारण है कि मन्त्री प्रजा से निडर होकर घूस ले रहे हैं। अभी हाल ही मैं राज चलाने का व्यय पूरा करने के लिए नया कर लगाया गया है। तभी राजकुमार गोपाल पिता से मिलकर आता है और माँ को बताता है कि पिता जी ने नये कर हटाना स्वीकार नहीं किया, अपितु मुझे ही शर्मिन्दा किया है और वह कल भी एक नयी युद्ध यात्रा पर उद्भाण्ड जा रहे हैं। योगेश्वरी सुगन्धा की महाराज के साथ युद्धयात्रा पर जाने के लिए प्रेरित करती है ताकि रास्ते में वह उन्हें समझाकर भविष्य में निरर्थक हिंसात्मक युद्धों से रोक सके। चतुर्थ दृश्य में विजय प्राप्त करके लौटता हुआ राजा शंकरवर्मा विष–बाण से घायल हो जाता है। वह पहाड़ी रास्ते पर लगाये गये शिविर में मृत्युशय्या पर पड़ा है। सुगन्धा पास बैठी उसे धीरज बंधा रही है। महाराजा शंकरवर्मा कहते हैं कि मेरा अन्तिम समय आ गया है। सुगन्धा कहती है मैं औषधि लगा देती हूँ जिससे आपको तुरन्त आराम आ जाएगा। महाराज कहते हैं अन्त समय में कोई भी औषधि काम नहीं करती। राजा को पश्चाताप है कि उस के हिंसक युद्धों में हजारों सैनिक जिन्दगी भर के लिए विकालांग हो गये हैं। उसे उन सैकड़ों विलाप करती हुई नारियों का ध्यान आता है कि जिनका सुहाग युद्धों की भयंकर आग में भस्म हो गये हैं। वह दुःखी है कि वह अब जीते जी कश्मीर की भूमि तक नहीं पहुँच सकेगा और सुगन्धा से इच्छा प्रकट करता है कि उसका दाह संस्कार कश्मीर की धरती पर किया जाये। वह सुगन्धा को प्रेरित करता है कि सती होने के बजाय वह जिन्दा रहकर मन्त्री प्रभाकर देव की सहायता से गोपालवर्मा की संरक्षिका बनकर राजशासन को चलायें। शंकरवर्मा की मृत्यु होने पर सुगन्धा चीख पड़ती है परन्तु परिस्थिति को देखकर अपने को संभाल लेती है। राजा की मृत्यु की सूचना से सेनाओं में विप्लव की आशंका है अतः वह इसे गुप्त रखकर छः दिन की यात्रा करके बारामुला पहुँचने पर राजा के शरीर का दाह संस्कार कराती है।

### (ङ) द्राक्षामतःशकुन्तला

"पुरन्ध्रीपूचकम्" रूपक संग्रह का पांचवां रूपक "द्राक्षामतःशकुन्तला" है जो डेनमार्क के प्रसिद्ध कवि द्राखमैन के जीवन की कुछ घटनाओं पर आधारित है। कवि ने अपनी गर्भवती पत्नी को त्याग दिया था। उसी पत्नी की मधुर स्मृति में लिखी उस की कविता भारत की महाकवि कालिदास के प्रभाव को प्रकट करती है।

इस रूपक के प्रथम दृश्य में विलीना (विल्हेल्मिन) अपनी दो सखियों चारुलता और शालिनी के साथ समुद्रतट पर भ्रमण कर रही है। वह दोनों जानती हैं कि विलीना को कवि द्राक्षामान् से प्रेम है और द्राक्षामान् भी विलीना से प्रेम करता है। यही सोचकर वह उन दोनों को मिलवाने का प्रयास करती है। समुदतट पर कवि द्राक्षामान् के काव्य गीत को सुनकर चारुलता गीत की प्रशंसा करती है कि कितना मधुर गीत है। चारुलता द्राक्षामान् से कहती है कि हमारी सखी आपके काव्य में अत्यन्त अनुरक्त है और वह केवल काव्य के प्रति ही नहीं, अपितु आप के प्रति भी हृदय से समर्पित है। विलीना के विचारों को अपने अनुकूल पाकर कवि उसके सामने प्रणय प्रस्ताव रखता है। द्राक्षामान् विलीना को बताता है कि उसके पिता उसे डॉक्टर बनाना चाहते हैं परन्तु उसकी रुचि साहित्य में है। विलीना द्राक्षामान् के विचारों से प्रभावित होकर उसके प्रणय प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है। वह द्राक्षामान् से कहती है कि तुमने अपने मन की बात मानकर बहुत अच्छा किया है यदि तुम्हारा मन साहित्य में था तो तुमने उसको दूसरी ओर नहीं मुड़ने दिया। वह कहती है "मन ही मनुष्य का कारण हेतु है, मन ही मनुष्य को बन्धन में डालता है और मन ही उसे इस बन्धन से मुक्त करता है।" कवि द्राक्षामान् कहता है कि विलीना तुमने मेरे हृदय के भाव को प्रकट किया है। तभी चारुलता कहती है कि आपके हृदय की बात तो विलीना समझ गई अब आप भी उसके हृदय की कामना को पूरा कर दो। तभी द्राक्षामान् और विलीना समुद्र तट की महत्ता का वर्णन करते हुए जलनिधि को ही अपने प्रणय का साक्षी मानते हैं। द्वितीय दृश्य में द्राक्षामान् और विलीना अपनी मधुयात्रा का वृत्तान्त शालिनी को सुनाते हैं। द्राक्षामान् बताता है कि मेरे पिता के पास अत्यधिक धन होने के बावजूद भी मैं अपने साहित्य के कार्य में उसको नहीं लगाना चाहता। पिता जी के मना करने पर भी वह पत्नी सहित इंग्लैण्ड जाकर कोई काम ढूंढ कर वहीं रहने की सोचता है। शालिनी उन्हें इंग्लैण्ड जाने की शुभकामनाओं सहित विदाई देती है, शालिनी विलीना से कहती है कि तुम इतनी दूर जा रही हो मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। तुम्हारी जीवन यात्रा कैसे चलेगी इससे विषय में चिन्ता हो रही है। द्राक्षामान् कहता है कि इसके बारे में वह चिन्ता न करें। हम जाते ही कुछ दिन एक मित्र के यहां रहेंगे, फिर उसके बाद अपने घर में रहेंगे। उसने मेरे लिए एक नौकरी का प्रबन्ध भी वहां पर कर दिया है। शालिनी कहती है कि जाते ही मुझे पत्र लिख देना और आपकी यात्रा मंगलपय हो।। इति।।

### संदर्भ ग्रंथ


1. रूपकं तत्समारोपात् – दशरूपक – 1.7।
2. पुरन्ध्रीपूचकम् – मेनकावात्सल्यम् – प्रथम दृश्य –पृष्ठ 5।
3. पुरन्ध्रीपूचकम् – मेनकावात्सल्यम् – तृतीय दृश्य –पृष्ठ 9।
4. पुरन्ध्रीपूचकम् – अपूर्वः प्रतिशोध – द्वितीय दृश्य –पृष्ठ 21।
5. पुरन्ध्रीपूचकम् – मदालसा – प्रथम दृश्य – पृष्ठ 35।
6. पुरन्ध्रीपूचकम् – मदालसा – प्रथम दृश्य – पृष्ठ 37।
7. पुरन्ध्रीपूचकम् – सुगन्धा – प्रथम दृश्य – पृष्ठ 61।
8. पुरन्ध्रीपूचकम् – सुगन्धा द्वितीय दृश्य पृष्ठ 62–63।
9. पुरन्ध्रीपूचकम् – सुगन्धा – तृतीय दृश्य पृष्ठ 65।